# 14

# पीजीआइएस प्रयोगकर्त्ताओं, सहायकों, तकनीकी मध्यस्थों एवं शोधकर्त्ताओं के लिए व्यावहारिक नीतिशास्त्र

गायाकोमो रॅमबाल्डी, रोबर्ट चेम्बर्स, माइक मिकॉल तथा जैफ़रसन फौक्स

**''विश्व के विभिन्न भागों के अभ्यासकर्त्ताओं, शोधकर्त्ताओं तथा कार्यकर्त्ताओं ने जाँच किया है और एक समेकित दृष्टिकोण तथा विधि-विज्ञान विकसित किया है, जिसने अनेक नवीनताओं का नेतृत्व किया है, जिन्हें आजकल सहभागी जीआइएस (पीजीआइएस) अभ्यास के रुप में नाम दिया गया है।''**

## परिचय

सन् 1998, में भूगोलवेत्ताओं ने डरहम में एक कार्यशाला आयोजित किया जिसका मुख्य उद्देश्य था जीआइएस को उसकी शक्ति और भागीदारी के रुप में समझना। एक बहुचर्चित पत्रिका 'पार्टिसिपेटरी जीआइएस : ऑपोरचुनिटी और ऑक्सोनोरोन' (एब्बोट तथा अन्य, 1999) ने यह ध्यान दिलाने की कोशिश की कि बिना समुचित नियंत्रण के और बिना इसकी पूर्ण जानकारी के किसी भी स्थान विशेष की स्थानीय जानकारी का चित्रण करना तथा लोगों को इसे व्यवहार में इस्तेमाल के लिए उपलब्ध कराना खतरनाक है।

तभी से, स्थानिक सूचना तकनीकियों और आँकड़े बहुत सारे लोगों को उपलब्ध होने लगे। अभ्यासरत लोगों, अनुसंधानकर्त्ताओं तथा आंदोलनकारियों ने दुनिया के अलग-अलग हिस्सों में कई दृष्टिकोणों एवं विधि प्रणालियों को जाँचा एवं विकसित किया, जिसके फलस्वरुप अनेक नवाचार उत्पन्न हुए, उसमें **सहभागी जीआइएस (पीजीआइएस) अभ्यास** भी एक है।

पीजीआइएस के मूल में सहभागी शिक्षण तथा क्रिया (पीएलए) और सहभागी ग्रामीण मूल्याँकन (पीआरए) है। यह सहभागी दृष्टव्य, मानचित्रण, स्थानिक सूचना तकनीकियों (एसआइटी), स्थानिक शिक्षण, संचार तथा हिमायत हैं। इस अभ्यास ने बहुत सारे विविध रुप लिये एवं सभी प्रकार के तनावों, समस्याओं एवं गुणवत्ता से संबंधित दुविधा बनाम प्रसार, मानकीकरण बनाम रचनात्मकता, गति बनाम गुणवत्ता, महाजन और देनदार का उत्साह और व्यय करने की चाहत बनाम सहभागिता और उन सभी का सशक्तिकरण जिन्हें सशक्त होना चाहिए - का सामना करते हुए आगे बढ़ा।

फॉक्स तथा अन्य (2005) ने दो वर्षों तक एशिया में सहभागी मानचित्रण परियोजना के अध्ययन के पश्चात् निष्कर्ष दिया कि :

*एसआइटी, भूमि और संसाधन संबंधित सम्भाषण, भौगोलिक जानकारियों का अर्थ, मानचित्रण एवं वैधानिक व्यवसायिकों के अभ्यास एवं अंत में स्थान से संबंधित अनेक अर्थों को परिवर्तित कर देता है।*

यह लेख आगे यह भी तर्क देता है कि 'समुदाय जिनके पास मानचित्र नहीं हैं वे वंचित रह जाते हैं क्योंकि अधिकार और शक्ति स्थानिक विशेष अर्थ में गठित है' (फॉक्स, 2005-07) तथा आलोचनात्मक निष्कर्ष देते हैं कि मानचित्रण आवश्यक होता गया है - इस तरह से मानचित्र न होना अस्तित्व तथा निजी भूमि और संसाधनों के प्रमाण की कमी के समान है। व्यापक रुप से, इसकी रुपरेखा ऐसी बनानी चाहिए जो, 'हमारे इरादे या गैर - इरादे क्रियाओं के परिणाम के गहन समझ एवं मानचित्रों की आलोचनात्मक स्पष्टता की आवश्यकता पर आधारित हो' (फॉक्स तथा अन्य, 2005)। जैसा कि ऑलविन वारेन (2004) ने कहा,

अच्छे परिवर्तन के लिए मानचित्रण : सभा में राबर्ट चेम्बर के प्रस्तुतीकरण से लिया गया अभिलेख

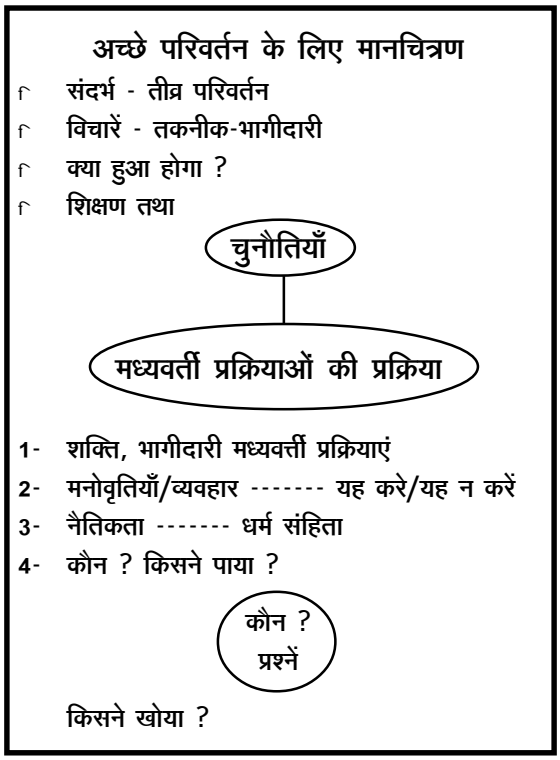


फोटो: जोहान मिनी/जेरोइन वरस्लांके

'मानचित्रण (...) राजनीतिक तथा सांस्कृतिक सन्दर्भ से - जैसा कि इसको व्यवहार किया गया है' - अलग नहीं किया जा सकता है।

सन् 90 के दशक में, सहभागी ग्रामीण मूल्यांकन (पीआरए) तेजी के साथ प्रसारित हुई जिसके परिणामस्वरुप बहुत लोगों की अपेक्षाओं को झेलना पड़ा - विशेषकर जब देनदारों और लेनदारों को बड़े पैमाने पर पीआरए की योजनाओं की आवश्यकता हुई। सभी प्रकार से दृश्य-संबंधी विधियाँ, जो उस समय अपनाये गये, सहभागी मानचित्रण - बहुत सारे रुप तथा उपयोगिता के साथ - न सिर्फ प्राकृतिक संसाधन प्रबंधन, बल्कि अन्य दूसरे क्षेत्रों में भी सर्वाधिक व्यापक हो गये (मैक कॉल, 2006)। मानचित्रण को एक तत्व मानते हुए, सहभागी विधियों में एक नये बहुलवाद तथा विभिन्न तत्वों के रचनात्मक मिश्रण के नये संकेत दृष्टिगोचर हो रहे हैं। मानचित्रण के माध्यम तथा अर्थ, चाहे वह क्षणिक हो, पत्र या जीआइएस हो या ऑन-लाइन मानचित्रण हो और इसे सहयोग करने का तरीका या ढंग हो इसके अन्तर्गत किस भाग को लिया, समाहित किया गया, क्या जोड़ा जा रहा है, परिणामस्वरुप तथा शक्ति संबंध - सभी कुछ प्रभाव डालती है। यह बहुत कुछ इसे सहायकों के व्यवहार तथा मनोवृति पर - और जो इन सारी प्रक्रियाओं पर नियंत्रण रखते हैं - निर्भर करता है।

## अच्छे अभ्यास की ओर शुरुआती कदम

ऐसा प्रतीत होता है कि हमारे मानव भौतिक, जैविक और सामाजिक-सांस्कृतिक संसार का भू-संदर्भ तथा सूचनाओं को लोगों तक पहुँच पाने की निरंतर उत्सुकता को रोका नहीं जा सकता। स्तब्ध करने वाले खोज (उदाहरणस्वरुप गुगल अर्थ) फिलहाल इंटरनेट या आधुनिक स्थानिक सूचना तकनीक के द्वारा आवश्यकता के अनुसार उपलब्ध है। इसी समय हाल में हुए अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन जो कि सेफगार्डिंग ऑफ इंटेजिबल कल्चरल हेरिटेज [1] जो अमूर्त्त धरोहर के आविष्कार का समर्थन करता है, लोगों के जानकारियों तथा मूल्यों को जो भू-संदर्भित करने में लगे हैं, उनके प्रति तीव्र नैतिक मुद्दे उठाता है।

इस संदर्भ में, वह रास्ता जो पीजीआइएस के अच्छे अभ्यास की ओर बढ़ाता है, इसके शुरुआती कदम बिखरे हैं। ये दुखद विरोधाभास तथा सशक्तिकरण, स्वामित्व तथा संभावित शोषण से संबंधित मुद्दों तथा 'कौन' तथा 'किसका' प्रश्नों पर ध्यान देने हेतु आह्वान कर रहे हैं (देखें बॉक्स 1)।

यदि तकनीकी मध्यस्थों द्वारा सावधानीपूर्वक विचार किया जाए, 'कौन?'/ 'किसके लिए?' प्रश्न अच्छे अभ्यास के वृहत परिपेक्ष्य में उपयुक्त मनोवृति तथा व्यवहार उत्पन्न कर सकते हैं।

## एक अच्छे अभ्यास तथा पीजीआइएस नीतिशास्त्र के लिए निर्देश

सहभागिता के संदर्भ में, स्थानिक सूचना तकनीकों (एसआइटी) का उपयोग समुदाय के ही सदस्यों, तकनीकी मध्यस्थों (सहायकों, अभ्यासकर्त्ताओं तथा आंदोलनकारों) तथा शोधकर्त्ताओं द्वारा सामुदायिक स्तर पर किया जा सकता है। इसका उपयोग कार्यकर्त्ताओं, आन्दोलनकारियों, सामाजिक वैज्ञानिकों, मानवशास्त्रियों, संरक्षकों और वैसे लोग जिनके पास एसआइटी कौशल या जो एसआइटी दल में लोगों के साथ जिनका एसआइटी की पेशेवर आधार है, के साथ समुदाय स्तर पर किया जा सकता है। दूसरी ओर, एसआइटी को सामुदायिक स्तर पर आइटी व्यक्तियों के द्वारा, जिनकी सामाजिक, सांस्कृतिक तथा जैव-भौतिक क्षेत्रीय विशेषताओं में अभिरुचि है तथा जो सामाजिक और वातावरण संबंधी विषयों पर पेशेवर लोगों के साथ सम्मिलित हो सकते हैं, प्रस्तुत किया जा सकता है।

प्रत्येक व्यवसाय और संस्कृति के साथ नैतिक सीमा और नीतिशास्त्र की संहिता होती है। पीजीआइएस को एक बहुआयामी अभ्यास के रुप में समझा जाता है यह अपेक्षा की जाती है कि यह विभिन्न नैतिक

[1] यूनेस्को का *सेफगार्डिंग ऑफ इंटेजिबल कल्चरल हेरिटेज* पर समझौता पेरिस में 17 अक्टूबर 2003 को हस्ताक्षर किया गया तथा 30 देशों के अनुसमर्थन के पश्चात् 20 अप्रैल 2006 में लागू हुई। देखें...
http.//unesdoc.unesco.org/images/0013/001325/132540.pdf

**बॉक्स 1 : 'कौन' तथा 'किसका' प्रश्नों का संग्रहण (विभिन्न स्त्रोतों से)**

**चरण I : योजना**
**कौन भाग लेता हैं ?**
कौन इस पर निर्णय करता है कि किसे भाग लेना चाहिए ?
किसके मानचित्रण में कौन भाग लेता है ?
.... और कौन छूट गया है ?
**कौन समस्या को पहचानता है ?**
किसकी समस्याएँ ?
किसकी प्रश्नों ?
किसका दृष्टिकोण ?
....और किसकी समस्याएँ, प्रश्नों तथा दृष्टिकोणों को छोड़ दिया जाता है?

**चरण II : मानचित्रण प्रक्रियाएँ**

**किसकी आवाज का महत्व है ? कौन प्रक्रिया को नियंत्रित करता है ?**
कौन निर्णय करता है कि क्या महत्वपूर्ण है ?
कौन निर्णय करता है, और किसे निर्णय लेना चाहिए, किस पर क्या कल्पना करना चाहिए और क्या सार्वजनिक बनाना चाहिए ?
कौन दृश्य पृथक एवं स्पर्श तक पहुँच सकता है?
सूचना के उपयोग को कौन नियंत्रित करता है ?
तथा कौन हाशिए पर है ?
**किसकी वास्तविकता ? और कौन समझता है ?**
किसकी वास्तविकता प्रकट हुई ?
किसकी जानकारी, श्रेणियाँ और दृष्टिकोण है ?
किसका सच और तर्क ?
किसकी क्षेत्र संबंधी संवेदनाएँ एवं सीमा संबंधी विचार (यदि कोई हो)?
किसका (दृश्य) स्थानिक भाषा ?
किसके मानचित्र शीर्षक ?
कौन सूचित किया गया है कि मानचित्र में क्या है ? (पारदर्शिता)
कौन भौतिक उत्पाद समझता है ? और कौन नहीं ? और
किसकी सच्चाई को छोड़ दिया गया ?

**चरण III : परिणामकारी सूचना नियंत्रण, प्रकटीकरण तथा निपटारा**
**कौन उत्पाद का स्वामी है ?**

कौन मानचित्र (मानचित्रों) का स्वामी है ?
कौन परिणामकारी ऑकड़े का स्वामी है ?
जिन्होने सूचना उत्पन्न किया और अपनी जानकारियों में हिस्सेदारी बँटाई, उनके साथ कौन छूट गया ?
कौन भौतिक उत्पाद रखता है, और इसका नियमित नवीनीकरण को संगठित करता है ?
**किसका विश्लेषण तथा उपयोग ?**
स्थानिक सूचनाओं को कौन विश्लेषित करता तथा एकत्रित करता है ?
कौन सूचना तक पहुँच पाता है और क्यों ?
कौन इसका प्रयोग करेगा और किस लिए ?
और कौन इस तक पहुँच नहीं सकता और न इसका उपयोग कर सकता है ?

**अंतत ---**
**क्या बदल गया है ? बदलाव से किसे लाभ हुआ ?**
**किस कीमत पर ?**
**किसने पाया और किसने खोया ?**

**कौन सशक्त हुआ और कौन असशक्त बना ?**

नियमों के प्रति प्रतिक्रिया करेगा। यह **अच्छे अभ्यास के लिए मार्गदर्शक** का उद्देश्य, निर्देश प्रदान करना है। ताकि जो पीजीआइएस अभ्यास कर रहें हैं तथा जो अभ्यास करना चाहते हैं उनके बीच नैतिकता से चयन कर सकें। **इन निर्देशों को बहुत ही विस्तृत नहीं होना चाहिए,** क्योंकि हरेक संस्कृति की अपनी नैतिक आदेशक होते हैं। यह मनुष्यों की जिम्मेदारी है कि अच्छे अभ्यास को निश्चित करने के लिए **सर्वोत्तम निर्णय** लें। इस संदर्भ में निम्नलिखित निर्देशों पर विचार करना चाहिए :

## खुले तथा ईमानदार रहें

यह शुरु से लेकर पूरे प्रक्रिया के दौरान लागू होता है। अभ्यासकर्त्ता अपनी योग्यता के लाभ एवं सीमाओं को जो की निष्कर्ष को प्रभावित करता है, उसे स्पष्ट और स्थानीय भाषा में वर्णन करें और जब पीजीआइएस के संभावित लाभ का वर्णन किया जा रहा हो, परिणाम के लिए कोई भी दावा नहीं करें जो सहायकों की शक्ति और उसकी संस्था की पहुँच के अन्दर न हों।

## उद्देश्य : कौन सा उद्देश्य? तथा किसका उद्देश्य?

उद्देश्य के विषय निश्चित और स्पष्ट हों - लोग इस खास अभ्यास में क्यों संलग्न होते हैं? प्रक्रिया के शुरु होने के पहले पीजीआइएस अभ्यास के उद्देश्यों तथा विभिन्न दलों का इनसे उम्मीदों पर खुले ढंग से वाद-विवाद होना चाहिए।

## सूचित सहमति प्राप्त करें

जैसा कि लोगों के साथ किसी भी शोध में, सहभागिता को ऐच्छिक अवश्य होना चाहिए। सहभागिता को ऐच्छिक होने के लिए, सहभागियों को यह जानने की जरुरत होती है कि किस प्रकार का मानचित्र बनने जा रहा है (उन्हें उदाहरण देना उचित होगा), विभिन्न प्रकार की सूचनाएँ जो मानचित्र पर होंगे और लोगों के लिए उस मानचित्र का सम्भावित उपयोग क्या होगा। लोग सहयोग करने के लिए अवश्य सहमत हों और किसी भी समय बिना पूर्वधारणा के छोड़ने में समर्थ हों। अनुप्रमाणित सहमति प्राप्त करने की प्रक्रिया शुरु में ही निर्धारित करनी।

**अपनी तरफ से सबसे अच्छा करें क्योंकि आप विशिष्ट सामाजिक समुदाय के साथ काम कर रहे हैं और आपकी उपस्थिति राजनीतिक रुप से तटस्थ नहीं रहेगी।**

पीजीआइएस हमेशा एक राजनीतिक प्रक्रिया रहा है और रहेगा, यदि आप, जटिल मुद्दे कौन सशक्त है और कौन वास्तव में कमजोर हो सकता है, तब समुदाय के लिए स्वतः कुछ गैर-इरादे के परिणाम आ सकते हैं। यह जान लें कि सामाजिक विभिन्न समुदायों की आन्तरिक क्रिया प्रणाली संदर्भ पर आश्रित रहते हैं जिनके बारे में पहले से अनुमान नहीं किया जा सकता है।

## गलत प्रत्याशा को बढ़ाने से दूर रहें

किसी भी क्रिया का विश्लेषण जो किसी बाहर वाले से प्रोत्साहित हो, उससे लोगों के कुछ भी लाभ की एक प्रत्याशा को बढ़ाता है, इसके बावजूद कि बाहर वाले समझाते हैं कि उनके पास कोई उपाय

**सर्वाधिक महत्वपूर्ण प्रश्न**
**'कौन ?' 'किसका ?'**

**कौन प्रश्न ?**
कौन (**किसके लिए**) ?
किसकी समस्याएँ ?
कौन से प्रश्न ?
कौन निर्णय करता है, कौन निर्णय करते है ?
किसकी शीर्षक ?
किसकी भाषा ?

कौन छूट गया है ?
किसका तर्क ?
कौन दृश्य ? स्वामी है, रखता है,उपयोग करता है?
कौन सा मानचित्र/मॉडल ?
कौन सशक्त है/कमजोर है ?
किसने पाया ? किसने खोया ?

फोटो: जोहान मिनी/जेराइन वरप्लांके

नहीं है तथा उनके वहाँ जाने से कुछ बदलाव नहीं भी हो सकता है तत्पश्चात् समुदाय में आगन्तुकों तथा संस्थाओं के प्रति निराशा तथा अवरोध होती है। शुरुआत में ही स्थानीय आशाओं को सुव्यवस्थित करने तथा उद्देश्यों के साथ समझौता करने पर काल्पनिक प्रत्याशा के खतरे कम हो सकते हैं।

## लोगों के समय लेने के प्रति उदार रहें

गरीबों का समय, कुछ आम धारणा के प्रतिकूल, काफी बहुमूल्य होता है, विशेषतः वर्ष के तकलीफदेह दिनों में (अक्सर रोपनी तथा कटनी के समय)। ग्रामीण लोग प्रायः बाहरी लोगों के साथ खास व्यवहार करते हैं। वे अतिथि सत्कार से नर्म तथा युक्त होते हैं, बाहरी उनके त्याग को नहीं समझते हैं, जो उनके लिए करते हैं। कटनी के समय का एक दिन खत्म हो जाने से अप्रत्यक्ष रुप से उन्हें इसकी बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है।

## जल्दबाजी न करें

इस तथ्य को स्वीकार करें कि सहभागी प्रक्रियाओं में समय की आवश्यकता होती है तथा यह सामान्यतः धीमा होता है तथा समय संबंधी परिर्वत्यों की मध्यस्थता अनुसूची के अनुसार ही होती है। पृष्ठ सं. 112 में दिये गये समझौता नहीं किए जा सकने वाले इस धारा से लाभ उठाएँ।

## विश्वास स्थापित करने में समय तथा संसाधन लगायें

एक अच्छे पीजीआइएस का मूल आधार समुदाय के अंदरूनी तथा बाहरी लोगों (तकनीकी मध्यस्थता) के बीच बनाये गये विश्वासों की बुनियाद पर टिका हैं।

## लोगों को जोखिम में डालने से रोकना

एक 3डी मॉडल पर कार्य करते समय,दक्षिण-पूर्वी एशिया के ग्रामीण, विरोधी समूहों के छिपने के स्थान को बताया, जिससे तत्काल खतरा हुआ। इंडोनेशिया के ग्रामीण श्रव्य-दृश्य के प्रयोग से अपने पारम्परिक लकड़ी के कुंदे के अभ्यास को दर्ज किया। इससे उनका दैनिक वातावरण बदल गया तथा उन्हें गैर-कानूनी स्थिति में डाल दिया।

## लचीला होना

दूरगामी दृष्टि की आवश्यकता के बावजूद, प्रक्रिया को लचीला, परिस्थिति के अनुकूल तथा घुमावदार, पूर्व निर्धारित उपकरणों तथा प्रविधियों से दृढ़ता से चिपका हुआ नहीं होना चाहिए, या फिर, मानचित्रण अभ्यास (सहभागी अनेकों विशेषज्ञों, वैज्ञानिक तथा गैर-सरकारी संगठन तथा समुदाय के अंदुरुनी लोगों के बीच एक दो-तरफा शिक्षण है) का प्रारंभिक उद्देश्यों को जानबूझकर अनदेखा नहीं करना चाहिए।

### विचार करें कि स्थानिक सूचना तकनीकियों पर स्थानीय लोगों की विशेषज्ञता (या स्थानीय तकनीकी मध्यस्थताओं) पर्याप्त प्रशिक्षण के उपरांत ही हो सकती है।

जीआइएस का व्यवहार आवश्यक नहीं हैः बल्कि यह एक ऐच्छिक है। 'जैसे-जैसे तकनीकियों की जटिलतायें बढ़ती जाती हैं,समुदाय की तकनीकियों तक पहुँच कम होती जाती है' (फॉक्स,2005)। अपने आप से पूछें : क्या जीआइएस वास्तव में आवश्यक है ? क्या जीआइएस कुछ और अन्य चीजें प्रदान करेगा जो किसी अन्य सहभागी मानचित्रण विधियों से प्राप्त नहीं होगा ?

### स्थानिक सूचना तकनीकियों जो स्थानीय वातावरणीय स्थिति तथा मानवीय क्षमताओं को अनुकूलित करती है, उनका चयन करें ।

उपयुक्त स्थानिक सूचना तकनीकियों जिनका उद्देश्य कम से कम कुछ प्रतिभागियों या समुदाय द्वारा मनोनीत मध्यस्थताओं द्वारा समान रूप से पहुँच तथा नियंत्रण प्रदान करना हो, उसे चयन करें।

### बाहरी सीमाओं को नजरअन्दाज करें बशर्ते कि इस अभ्यास का खास विशेष उद्देश्य है

सीमायें परिवर्तित, मौसमी, अस्पष्ट, एक दूसरे पर आच्छादित या गतिशील हो सकती है (देखें उदाहरण-मैककॉल, इसी अंक में)। दिखाई देने वाली सीमायें - यदि सूचना देने वाले के द्वारा विशेष रूप से सीमाओं - संबंधी मुद्दे - को विशेष रुप से संबोधित करने हेतु आग्रह न किया गया हो- स्थान के अर्थ को बदल सकती है और अव्यक्त या ऐसे संघर्षों को सुलगा सकती हैं, जिनका अस्तित्व पहले नहीं था।

सभा में कार्य प्रगति पर : व्यवहार एवं मनोवृतियों पर रॉबर्ट चेम्बर के फ्लिप चार्ट अभिलेख

**व्यवहार तथा मनोवृतियाँ (पीआरए के द्वारा)**

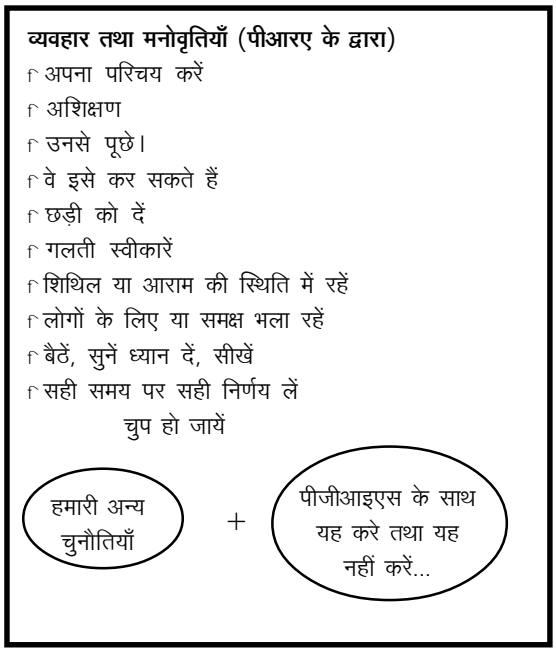

- अपना परिचय करें
- अशिक्षण
- उनसे पूछे।
- वे इसे कर सकते हैं
- छड़ी को दें
- गलती स्वीकारें
- शिथिल या आराम की स्थिति में रहें
- लोगों के लिए या समक्ष भला रहें
- बैठें, सुनें ध्यान दें, सीखें
- सही समय पर सही निर्णय लें

चुप हो जायें

हमारी अन्य चुनौतियाँ + पीजीआइएस के साथ यह करें तथा यह नहीं करें...

फोटो: जोहान मिनी/जेराइन वरण्लाके

## यथार्थता के नाम पर किसी स्थान के स्थानीय प्रत्यक्षीकरण का बलिदान न करें

स्थानिक यथार्थता सापेक्षित है और इसका महत्व तब हीं होता है जब बहुत विस्तार से किसी सीमाओं या क्षेत्र से संबंधित आँकड़ों की आवश्यकता होती है। अक्सर परिशुद्ध मापन पर जोर दिया जाता है बजाए कि उन स्थानीय तथ्य को ढूँढ़ने तथा जाँच करने में जिसके बारे में लोग वास्तव में बातचीत करते हैं, जैसे बेहतर है विभिन्न प्रकार के आच्छादित पारंपरिक भूमि धारण अधिकार के प्रचलित नियम को समझने में अच्छे प्रयासों को बढ़ाना बजाए कि मनमाने बनायी गई सीमाओं का मापन मीटर या सेंटीमीटर में करना।

## क्रियाओं की पुनरावृति से बचें

मलावी के कुछ गाँवों (निःसंदेह, प्रवेश योग्य) को पीआरए के साथ 'कालीन-बम' कहा जाता है, यह बार-बार सूचना दी जाती है कि आगन्तुकों को आने एवं उनके साथ समझौता करने के पहले ही बार-बार रोक दिया जाता है- जबकि 'दूरस्थ' गाँव में आगन्तुकों का कभी जाना नहीं हुआ। बार-बार, मानचित्र बनाए जाते हैं, तत्पश्चात् बाहरी द्वारा ले जाए जाते हैं।

## समुदाय में तनाव तथा हिंसा उत्पन्न करने में सावधान रहें

यह स्थिति तब उत्पन्न होती है उदाहरण के लिए जब वैसी महिलायें जो सहभागी क्रियाओं में भाग लेती हैं, और जब बाहरी लोगों के छोड़ने के बाद उन्हे अपने पतियों के द्वारा प्रताड़ित किया जाता है या पीटा जाता है। यह समुदाय के किसी भी 'निचले'/अधीन/अलाभान्वित समूहों पर लागू होता है।

## स्थानीय मूल्यों, आवश्यकताओं तथा महत्व के विषयों को प्राथमिकता दें

ऐसी स्थिति तब उत्पन्न हो सकती है, जब किसी कार्य की प्रगति शोध से जुड़ी आवश्यकताओं के लिए उपयोगी होती है, लेकिन समुदाय की आवश्यकताओं को पूरा करने में विरोधी हैं। ये सभी 'सहभागी' कार्यक्रमों के लिए सर्वव्यापक दुविधा है - क्या परिणाम को उच्चतर प्राथमिकता, जैसा कि, आवश्यक मानचित्र या समुदाय के सशक्तिकरण तथा क्षमता को बढ़ावा देने में है-या समुदाय के सशक्तिकरण को बढ़ावा देने में हैं। इसका नैतिक पहलु इस तरह के विकल्पों की खोज करना है जो कार्य की प्रगति करे और जो समुदाय की आवश्यकता के अनुरूप हो। स्थानीय जनता तथा उनके समुदाय प्रधान या हिस्सेदार हैं, ग्राहक नहीं। इसलिए पीजीआइएस का सूत्रपात उन्ही से उत्पन्न होना चाहिए, कहीं बाहरवालों से नहीं । अतः, सहभागिता उद्देश्य को निश्चित करने की प्रक्रिया में आवश्यक है।

### बाहरी लोगों के विश्लेषण और व्याख्या के लिए केवन मात्र आँकड़ों के संग्रह करने के बजाय स्थानिक शिक्षण तथा सूचना उत्पादन को प्रोत्साहित करना

केवल बाहरी लोगों के लाभ के लिए सूचनाओं को निकालने से रोकना चाहिए। यदि सिर्फ अनुसंधान करना ही उद्देश्य है, तो खुले तथा ईमानदार हों, इसकी अनुमति लें और अपनी तरफ से लाभ की हिस्सेदारी के लिए अधिकतम प्रयास करें। स्थानीय जानकारी के व्यवसायिक मूल्यों का यह एक मुख्य मुद्दा है।

## स्थानीय तथा स्थानिक तकनीकी प्रबंधन एवं स्थानिक जानकारी पर केन्द्रित करें ...

... तथा स्थानीय विशेषज्ञ, स्थानीय संस्कृति, समाज ,स्थानिक संज्ञान, तथा जीविकावृति, स्थानीय संसाधन, आपत्ति, एवं विकल्प इत्यादि को समझने हेतु अन्वेषण करते हुए।

## स्थानीय स्थलों के नामों के प्रयोग को प्राथमिकता दें ...

... (भौगोलिक नामों के अर्थ) मालिकाना, तथा आन्तरिक और बाहरी के बीच संचार को सहज बनाने की समझ को निश्चित करना।

'कौन' और 'किसका' के प्रश्न पर निर्माण, नीतिशास्त्र पर विमर्श जारी

**नीति संहिता की ओर**

- पहले
- जाँच तथा पुनः जाँच
- उद्देश्य-किसके लिए ?
- विचार/समघात/प्रभाव
- कौन किसे किस किमत पर लाभ पहुँचा रहा है ?
- जबतक
- अनेकता विभिन्नता के प्रति सजग हो जायें
- मेल रखें
- नयापन के लिए तैयार रहें
- आवश्यक वास्तविकतायें

फोटोः जोहान मिनी/जेरोइन वरप्लाके

## मानचित्र और मानचित्रण एक साधन है साध्य नहीं

सामुदायिक स्तर पर उत्पादित स्थानिक आँकड़े तथा मानचित्र चिरकालीन और स्पष्ट प्रक्रिया के मध्यस्थ उत्पाद हैं जिसमें स्थानिक सूचना प्रबंधन जालतंत्रो तथा संचार के साथ मिलाया जाता है (जैसे, सर्मथन देना)

## उचित संरक्षक को सुनिश्चित करें

सुनिश्चित करें कि सहभागी मानचित्रण अभ्यास के मौलिक भौतिक उत्पाद जिसने उत्पादन किया है या विशेषकर सूचनादाताओं द्वारा मनोनीत एक विश्वसनीय हस्ती के पास रहता है। उत्पादों को दूर ले जाना - भले ही थोड़े समय के लिए हों-यह एक कमजोर सशक्तिकरण की क्रिया है। समुदाय के द्वारा निर्मित उत्पादों के बहुत प्रतिलिपियों में अधिक समय गाँव में व्यतीत किया जाता है, अतिरिक्त प्रयास, तथा अधिक आर्थिक संसाधन की आवश्यकता होती है। ऐसी स्थिति में अच्छे अभ्यास का मूल्य तथा समय बढ़ जाता है पर यह सुनिश्चित करता है कि स्थानिक सूचना देते हैं वे अपने बौद्धिक सम्पत्ति (आइपी) तथा प्रयास से वंचित नहीं होते हैं।

## बौद्धिक स्वामित्व की पहचान को सुनिश्चित करना

यह सुनिश्चित करें कि अनेकों, मानचित्रो की पूर्ण गुणवत्तायुक्त प्रतिलिपियाँ, काल्पनिक व्याख्या, एरियल/सेटेलाइट प्रतिबिम्ब तथा/या अंकीय आँकड़ों का समूह उन्ही के साथ रहना चाहिए जो अपने स्थानिक जानकारियों को व्यक्त किया तथा हिस्सा बँटाया। बशर्ते कि आप जानकार व्यक्ति से सूचना पर सहमति प्राप्त करें, आप-एक तकनीकी मध्यस्थ के रूप में-चुनिंदा मानचित्रो तथा/या आँकड़ों के समूहों को रख सकते हैं।

## प्रक्रियाओं से उत्पन्न होनेवाली नयी वास्तविकताओं का सामना करने हेतु तैयार रहें

स्थानीय जानकारियों की कल्पना तथा भू-संदर्भ सूचनादाता तथा मानचित्रण अभ्यास से प्रभावित व्यापक जनता के स्थान के प्रत्यक्षीकरण तथा समझ में परिवर्तन ला सकता है। ये परिवर्तन शक्ति संबंधों तथा सामाजिक क्रम पर प्रभाव डाल सकते हैं, तथा नए संघर्षों को उत्पन्न कर सकते है या अव्यक्त संघर्षों को भड़का सकते हैं। अतः नए संघर्षयुक्त वास्तविकता का सामना करने हेतु तैयारी करना चाहिए।

## प्रक्रियाओं का निरीक्षण करें

यह दोनों ओर की समझ को बढ़ाता है। प्रश्न पूछें, गहराई में जाएँ, इसकी व्याख्या विस्तार से माँगे, इसकी उदाहरणार्थ- क्या यहाँ नियमितता है तथा परिणामों में विपरीतता क्यो हैं?

## सुनिश्चित करें कि मानचित्रण की प्रक्रिया के उत्पाद को सभी संबंधित लोगों के द्वारा समझा जाए

शीर्षक वह शब्द कोष है जिसके द्वारा मानचित्र की व्याख्या की जाती है। सुनिश्चित करें कि मानचित्रों के शीर्षक को सूचनादाताओं तथा तकनीकी मध्यस्थों के गहन विचार-विमर्श से विकसित है।

**निश्चित करें कि पारम्परिक जानकारियाँ(टीके) के सुरक्षात्मक बचाव या तरीके जो पारम्परिक जानकारियों पर बौद्धिक सम्पदा (आइपी) अधिकार प्रथागत पारम्परिक जानकारियों (टीके) धारकों के अलावा दूसरे दलों को नहीं दी जाती है**

मानचित्रण प्रक्रिया द्वारा उत्पादित स्थानिक आँकड़ों का कैसे व्यवहार किया जाए बचायी जाए, बर्बाद की जाए या प्रकट की जाए, इन सभी बातों की सूचनादाताओं से विमर्श करें। किसी भी तरह के आँकड़ों के सुरक्षा के लिए पहले से तैयार रहें।

**यदि संभव है तो, पारम्परिक जानकारियों (टीके)की सकारात्मक सुरक्षा के लिए अपनी ओर से अधिकतम प्रयास करें या टीके के अंतर्गत सकारात्मक अधिकारों के निर्माण जो की टीके धारकों को उनकी सुरक्षा तथा उन्नति के लिए सशक्त करता है- को सुनिश्चित करें**

कुछ राष्ट्रों में, सु-जेनरीस विधायिका को मुख्य रूप से पारम्परिक जानकारियों (टीके) की सकारात्मक सुरक्षा को बताने के लिए विकसित किया गया है। सुविधा प्रदाता तथा उपयोगकर्त्ता एक संविदा के समझौते के तहत इसके संपर्क में आ सकते हैं और सुरक्षा संबंधी पूर्वकर्त्ता आई.पी. तंत्रों का प्रयोग करते हैं (डब्लुआइपीओ, 2006)।

## लोगों को बलपूर्वक विस्थापित करने में अभ्यास का प्रयोग न करें

किसी स्थान के निवासियों से मानचित्र पर उस स्थान की जानकारी के विषय में न पूछें जो कि उन्हें उनकी जगह से विस्थापित कर दे। बहुत सी ऐसी जगहें हैं जो सुरक्षित क्षेत्र के रुप में महत्व रखती है तथा वैसे क्षेत्र किसी भी मानवीय बस्ती तथा कार्य के लिए निषेध क्षेत्र

घोषित की गई है, डी फैक्टो लोगों के विस्थापन के संदर्भ में अपना समर्थन प्रस्तुत करता है।

### सूचनादाताओं को स्वीकार करें

यदि सूचनादाता की सुरक्षा के प्रति पूर्वाग्रह न हो, तो उनसे पूर्व स्वीकृति के पश्चात, उत्पादित अथवा/या आँकड़ों के समूह पर योगदानकर्त्ताओं के नाम दें।

### मानचित्रों का पुनः परीक्षण करें तथा दुहराएँ

मानचित्र कभी भी पूर्ण या स्थिर नहीं होते हैं। वे 'पत्थर की लकीर' नहीं होते-उन्हे बार-बार जाँचना चाहिए, संशोधित करना चाहिए, तथा नई जानकारियों के साथ तत्कालीन करना चाहिए।

**अन्तर्राष्ट्रीय सर्वेक्षण की निर्देशिका जैसे कि एएए नीतिशास्त्र संहिता... की जाँच करे**

... जो की मानवशास्त्रियों को इस बात की याद दिलाता रहेगा कि न केवल वे सूचना विषय के तथ्य के प्रति जिम्मेवार हैं, बल्कि वे इसके सामाजिक-सांस्कृतिक तथा राजनीतिक प्रभावों के प्रति भी जिम्मेवार हैं।

दे खें www.aaanet.org/committees/ethics/ethcode.htm

### जीआइएस की नीति संहिता पर विचार करें

जीआइएस व्यवसायकों को ये दिशा निर्देश कराती है,
देखे www.gisci.org/code_of_ethics.htm

### समझौते के अनुबंध हेतु नहीं किए जाने वाली प्रस्तावित स्थितियाँ

उनके अपनाने के शर्त स्वरूप, उपर वर्णित कुछ दिशा निर्देश योजना क्रियान्वित करने वाले के मनोवृति और व्यवहार उनके अपनाने के शर्त स्वरूप, उपर वर्णित कुछ दिशा निर्देश की उपयोगिताएँ मुख्यतः आर्थिक तथा मानव संसाधन तथा आवश्यकता समय के रूप में है। अच्छे अभ्यास के पूर्व शर्तों को परियोजना निर्माण के समय, जितना जल्दी हो सके शुरुआत में ही वर्णन करना चाहिए तथा अंततः सेवा अनुबंध के रुप में अग्रसारित करना चाहिए।

समझौते नहीं किए जाने वाली स्थितियों पर विचारों में भिन्नताएँ हैं। एक विचारधारा यह है कि समझौते नही जाने वाले स्थितियाँ **नहीं** होनी चाहिए, क्रियाओं के ऐसे **सिद्धांत** होने चाहिए जो सभी स्थिति के लिए उचित हो। दूसरा, अधिक व्यापक विचार है कि, **कुछ परिस्थितियाँ इतनी आम हैं कि समझौते नहीं करने वाले स्थितियों की आवश्यकता है** क्योंकि ये समझौते करने वाले के हाथ तथा इच्छाओं को मजबूत करती है- विशेषकर जब शक्तिशाली स्वार्थ प्रभावित हो। इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए, **समझौता न करने वाली स्थितियों को प्रस्तावित** किया जा रहा है, जिसे तकनीकी मध्यस्थों को, पीजीआइएस पहलुओं वाले परियोजना संचालन हेतु समझौते के समय देनदार तथा लेनदार एजेन्सियों के सामने अनुबंध पर समझौते हेतु रखा जा सकता है। बाद में, इन शर्तों को परियोजना के संचालन अनुबंध में शामिल करना चाहिए।

- सहायकों के प्रशिक्षण में व्यक्तिगत व्यवहार तथा मनोवृति, पीजीआइएस के नैतिक नियम तथा विश्वास बढ़ाने पर मोड्यूल रहना चाहिए।
- पीजीआइएस परियोजना में वित्तीय भुगतान तथा क्षेत्र पर समय निर्धारित लक्ष्य नहीं होना चाहिए बर्शते कि वे कमजोर लोगों के अधिकारों के लिए खतरनाक न हों। सही सहभागिता में समय लगता है अतः यह उपाय होना चाहिए कि धन का साल-दर-साल इस्तेमाल किया जा सके।
- पीजीआइएस अभ्यास को एक उचित पैमाने में सीमित रखना चाहिए तथा इसे एक कदम या उस सीमा तक नहीं बढ़ाना चाहिए जिससे वास्तविक सहभागी प्रक्रियाएँ रुक जाँए या कमजोर हो जाँए।
- अनुसंधान तथा संबंधित क्रियाएँ, सहभागियों के सूचित सहमति पर आधारित होनी चाहिए।

### अंतिम टिप्पणी

यह दस्तावेज एक चर्चा का परिणाम है जो 1990 दशक के प्रारम्भ तथा मध्य में शुरू हुआ (टर्नबुल,1989; बोन्डी तथा डोमोश, 1992 (एक महिला समालोचक); वुड, 1992; रन्डस्ट्रम, 1995; एनसीजीआइए वेरिनस,[2] 1996; डन, 1997; एब्बोट, 1998)। यह विवाद सहभागी शिक्षण तथा क्रियाओं के संदर्भ में स्थानिक सूचना तकनीकियों के व्यापक अभिग्रहण के पश्चात् अधिक आलोचनात्मक हो गया है। परिवर्तन हेतु मानचित्रण सम्मेलन (आइआइआरआर, 2006) में व्यावहारिक नीतिशास्त्र तथा अच्छे पीजीआइएस अभ्यास के लिए संहिता की आवश्यकता प्रकाश में आई। नैरोबी के सभा भवन से जहाँ सितम्बर 2005 में सम्मेलन हुआ, पीजीआइएस नीतिशास्त्र से संबंधित मुद्दे साइबर स्पेश में डाले गये तथा सहभागी भौगोलिक सूचना तंत्र एवं तकनीकियों के एक खुले मंच के द्वारा एक व्यापक विवाद का विषय बन गए(www.ppgis.net) प्रतिक्रियाएँ और टिप्पणियों की समीक्षा की गयी तथा सावधानीपूर्वक विचार किया गया एवं पाये गये निर्देश इस पत्र में प्रतिबिम्बित हैं।

मानचित्रों की शक्ति, एसआइटी तथा आधुनिक संचार तकनीकें उन सभी लोगों से, जो पीजीआइएस अभ्यास में सम्मिलित हैं, अधिक जिम्मेदारी लेने हेतु आहवान कर रहा है। जैसा कि एक प्रमुख अन्वेषक, पर्यावरणविद्, चलचित्र निर्माता तथा अनुसंधानकर्त्ता- जैक भीव कौस्तु ने कहा है :

बगैर नीतिशास्त्र के, सभी कुछ इस तरह घटती है जैसे कि हम सभी बिना चालक के बड़े ट्रक के यात्री हैं, तथा, ट्रक तीव्र - से - तीव्र गति से न जाने कहाँ जा रहा है।

---

[2] एनसीजीआइए (नेशनल सेन्टर फॉर जिऑग्राफिक एण्ड एनालेसिस) प्रोग्राम स्पोंटेड रीसर्च इनिटीएटीभ 1-19 'द सोशल इम्प्लीकेशन ऑफ हाउ पिपुल, स्पेस एण्ड इन्वायरमेंट आर रीप्रजेन्टेड इन् जीआइएस' देखें www.ncga.ucsb.edu/varenius/ppgis/papers/index.html www.ncgia.ucsb.edu/varenius/ppgis/ncgia.htmls

**सम्पर्क विवरण**
गायाकोमो रॅमबाल्डी,
टेक्निकल सेन्टर फॉर एग्रीकल्चरल एण्ड रुरल डेवलपमेन्ट (सीटीए)
वेगनिन्गेन
द निदरलैण्डस्
Email: rambaldi@cta.int

रोबर्ट चैम्बर्स
इंस्टिच्यूट फॉर डेवलपमेन्ट स्टडीज
यूनिवर्सिटी ऑफ ससेक्स
ब्राइटन, बीएन1 9 आरई
यूनाईटेड किंगडम
Email: R.Chambers@ids.ac.uk

माइकल के. मिकॉल
इन्टरनेशनल इन्स्टिच्यूट फॉर जिओ-इनफॉरमेशन
साइन्स एण्ड अर्थ ऑबजर्वेशन (आइटीसी)
पीओ बॉक्स 6
7500 एए
एनसेडे
द निदरलैण्डस्
Email: mccall@itc.nl

जैफरसन फौक्स
सिनियर फेलो
ईस्ट वेस्ट सेन्टर
1601 ईस्ट वेस्ट रोड
हनोलुलु
एचआई 96848
यूएसए
Email: FoxJ@eastwestcenter.org

## संदर्भ

एब्बॉट, जे., चैम्बर्स, आर., डन, सी., हैरिस, टी.,मेरोडे, इ.डी., पोर्टर, जी., टाउनसेन्ड,जे., वीनर, डी.,डी मेरोडे, ई,(1998).'पाटिसिपेट्री जीआइएसः ऑपरचुनिटी ऑर ऑक्सीमोरोन ?'पीएलए नोट्स 33. आइआइइडी; लंदन. www.iied.org/NR/agbioliv/pla_notes/pla_backissues/33.html

बॉन्डी, एल.,एण्ड दोमोश, एम. (1992)'अदर फिगर्स इन अदर प्लेसेसःऑन फेमिनिज्म, पोस्टमॉर्डनिज्म एण्ड जिऑग्राफी' *इनवायरमेन्ट एण्ड प्लानिंग* डीः सोसायटी एण्ड स्पेस 10

डन सी ई., एटकिन्स पीजे., टाउनसेन्ड, जेजी. (1997). 'जीआइएस फॉर डेवलपमेन्ट : ए कॉन्ट्राडिक्सन इन टमर्स ?' एरिया 29,151-159

फॉक्स जे. और अन्य, (2005). मैपिंग पावर : *आयरनिक इफेक्टस ऑफ स्पेशियल इनफॉरमेशन टेक्नोलॉजी इन मैपिंग कम्यूनिटिज, एथिक्स वैलयूस, प्रैक्टिस.* ईस्ट-वेस्ट सेन्टर : हनोलुलु, यूएसए. देखें- www.eastwestcenter.org/res-rp-publicationdetails.asp?pub_ID=1719

मिकॉल, एमके. (2006) *पीजीआइएस-पीएसपी-आइके-(सीबी) एनआरएम : अप्लाईंग पाटिसिपेट्री-जीआइएस एण्ड पाटिसिपेट्री मैपिंग टू पाटिसिपेट्री स्पेशियल प्लानिंग एण्ड टू लोकल-लेवल लैन्ड एण्ड लैण्ड रिर्सोसेस मैनेजमेन्ट यूटिलाइजिंग इन्डिजिनस एण्ड लोकल स्पेशियल नॉलेज.* ए बिब्लियोग्राफी. देखें - http://ppgis.iapad.org/pdf/pgis_psp_itk_cbnrm_biblio_mccall.pdf

रन्डस्ट्रॉम, आर. ए. (1995).'जीआइएस, इन्डिजिनस पिपल्स,एण्ड एपिस्टेमॉलॉजिकल डाइवर्सिटी.' *कार्टोग्राफी एण्ड जिऑग्राफिक इनफॉरमेशन सिस्टमस* 22:45-57.

टर्नबुल, डी. (1989/1993) *मैप्स आर टेरिटरिज. साइन्स इज एन एटलस.* शिकागो : यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो यूपी. फॉर:डेकिन यूनिवर्सिटी, विक्टोरिया,

वरेन, ए. (2004). इन्डिजिनस मैपिंग : मैपिंग फॉर इन्डिजिनस एडवोकेसी एण्ड इम्पावरमेन्ट, कॉन्फ्रेन्स इन वैन्कुवर, कनाडा, अप्रैल 2004. देखें - www.signup4.com/incoming/Draftagenda.pdf

वुड,डी, (1992) *द पावर ऑफ मैप्स,* गिलफोर्ड : न्यूयार्क, एनवाई अप्रकाशित, मैपिंग फॉर चेन्ज कॉन्फ्रेन्स, नैरोबी केन्या, ड्राफ्ट कॉन्फ्रेन्स रिपोर्ट, इन्टरनेशनल इंस्टिच्यूट फॉर रुरल रिकँन्सट्रक्शन (आइआइआरआर): ईस्ट अफ्रीका, नैरोबी, केन्या 2005-2006. पाटिसिपेट्री जिऑग्राफीक इनफॉरमेशन मैनेजमेन्ट एण्ड कम्यूनिकेशन (www.PPgis.net) के खुले मंच पर सदस्यों के विभिन्न योगदानों से

डब्लूआइपीओ (2006). *ट्रेडिशनल नॉलेज,* www.wipo.int/tk/en/tk, वर्ल्ड इन्टेलैक्चुअल प्रार्पटी ऑर्गनाइजेशन,

यूनेसको (2003). कन्वेन्शन फॉर द सेफगार्डिंग ऑफ द इन्टैन्जिबल कल्चरल हेरिटेज, देखें- http://unesdoc.unesco.org/images/0013/001325/132540e.pdf